सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना

कल्पना कीजिये की आप के पास एक समय मशीन है और आप अपने आप को समय में पीछे ले जाकर उस समय पर चले जाते हैं जब आप के दादा दादी बच्चे थे। आप ने पाया कि आपका मकान और उस के आस पास का वातावरण बहुत ही भिन्न है। अगर आप और भी पीछे जाते है तो आपको आश्चर्य और हैरानी होगी कि उस समय का खाना, पीना, पहनावा यहां तक की भाषा भी काफी भिन्न थी। क्या आप जानना चाहेंगे कि भूतकाल में क्या हुआ था? क्या आप जानते हैं कि हम अब भी भूतकाल से सम्बन्ध रख सकते हैं। यह सब क्या एक रहस्य है जो हम सुलझा सकते हैं। यह सब करने के लिये हमें उन तत्त्वों का प्रयोग करना पड़ेगा जो हमें इतिहास से आज तक को समझने के लिये करते हैं।

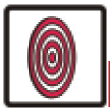

उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप यह जान पायेंगे कि –

- समाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनैतिक विज्ञान तथा सामाज विज्ञान भी शामिल होते हैं।
- यह समझ जाएंगे कि यह सारे विषय आपस में सम्बन्धित हैं और सब मिलकर सामाजिक विज्ञान है।
- आपस में इस विषय पर मंथन भी कर सकते हैं कि इन्सान कैसे समाज में रहता है।
- पहचान सकेंगे कि मौके कब आते हैं और उसका सामना कर सकें।

0.1 सामाजिक विज्ञान

जैसे नाम सुझाता है कि सामाजिक विज्ञान हमारे समाज से सम्बन्धित है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के हर पहलू को सुलझाने के काम आता है। इसके ज्ञान का दायरा बहुत बड़ा होता है और उसमें कई पहलू होते हैं। उनमें से कुछ पहलू जो आपके समझने के लिये हैं, वे हैं-

- इतिहास और एतिहासिक भवन
- भूगोल

- राजनैतिक विज्ञान
- सामाजिकता
- अर्थशास्त्र

इसके कई पहलू जो कि समाजिक विज्ञान से सम्बन्धित हैं। इस वर्ग में उन सारे तत्त्वों का अध्ययन व समझने कि कोशिश करेंगे खासतौर से इतिहास। हम यह समझेगे कि सामाजिक विज्ञान का अध्ययन कर के यह जानने कि काशिश करेंगे कि वो हम सबकी जिन्दगी से कैसे जुड़ी हुई हैं। हम यह जानेंगे कि हम कितने स्तर से गुजरे है जो गुफाँ में रहने से आज के वर्तमान विकसित देशों में रहते हैं। हम इस इतिहास को केवल एक विषय समझ कर अपने भूत के बारें में जानने की कोशिश न करके उससे ज्ञान लेने कि कोशिश करेंगे।

हम यहाँ सीखेंगे कि कैसे समय के अनुसार उन्नति तथा कार्यक्रम आपस में जुड़े हुये हैं। यह हमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान में आपस में कैसे जोड़ता है। इसका हम अध्ययन करेंगे कि इन सब बातों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

आप क्या सोचते हैं कि सामान्य विज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्त्व रखता है? इसको दो उदाहरण सहित समझायें।

....

....

....

....

0.2 सामान्य विज्ञान का अध्ययन

पढ़ाई के क्षेत्र में ऐसी कई शाखायें हैं जो कि हमें विद्या को कई स्तर अग्रिम शिक्षा का अध्ययन कराता हे। हो सकता है कि इनकी शाखायें कई बार एक दूसरे के साथ मिल सकती हैं, कुछ मुख्य शाखायें सामाजिक विज्ञान के साथ जो जुड़ी हैं वे हैं अर्थशास्त्र, इतिहास एवं ऐतिहासिक भवन, भूगोल, राजनैतिक विज्ञान एवं मनोविज्ञान।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि शुरू में केवल एक ही विषय था उदाहरण के लिये वह था दर्शनशास्त्र का मतलब होता है ज्ञान और उस विषय पर जानकारी। बाद में जब जानकारी बढ़ने लगी तो जरूरत पड़ी कि हम इनकी शाखा अलग करे। इसलिये विज्ञान और सामान्य विज्ञान अलग किये गये। दोनों विषय अलग-अलग चीजों को दर्शाते हैं। पर्यावरण विज्ञान हमको विश्व के बारे में समझता है तो सामाजिक विज्ञान हमें समाज और इंसानों के रहन-सहन के बारे में सिखाता है। चलो हम इतिहास से शुरू करते है।

0.2.1 इतिहास एक ऐतिहासिक भवन

इतिहास क्या है? इतिहास एक समाध्य है जो कि भूतकाल में जो कई चीजें हुई है। यह सच्चे लोग और सच्ची घटनाओं के बारे में हैं। यह केवल विचारों और ख्यालों से नहीं बना कि क्या होना चाहिये था बल्कि यह एक ज्ञान है कि क्या हुआ था। यह किसी एक के बारें में सम्बन्धित नहीं है। यह देशों तथा समाजों से सम्बन्धित है न कि किसी राजा या रानी के बारें में नहीं, परन्तु पूरे समाज और व्यक्तियों के बारें में है। यह हर एक इंसान नर या मादा, अमीर और गरीब के बारें में है इस बात से बेहतर कि उनका धर्म क्या है या जात क्या है। क्या आपने कभी सोचा कि हमारे पूर्वजों का बीते हुये समय में क्या हुआ था? इसकी जानकारी आपको इस पुस्तक से मिलेगी। इस विषय को पढ़ते समय जो चीज़ आपको पसन्द आये उसे आप उसको एक कापी में लिख लें। उसके बाद आप इंटरनेट और पुस्तकालय में जा कर उसके बारें में और जानकारी निकालें। इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने में हम भी आपकी मदद करेंगे।

हम इतिहास क्यों पढ़ते हैं?

इतिहास कि शिक्षा हमें अपने पूर्वजों कि जड़ तक, उनकी ताकत तथा उनकी उपलब्धियों के विषय में हमें बताती है जिन पर हमें गर्व होता है तथा उनसे हमें आगे बढ़ने की दिशा मिलती है। हमारी उपलब्धियाँ की जब तक हमें पूरी जानकारी नहीं होगी तो हम भूत के इतिहास को समझ नहीं पायेंगे। एक, आम राय तो यह है कि इतिहास तो मरे हुये लोगों से ही जुड़ा होता है। हकीकत में भूत हमारे जीवन में वर्तमान और भविष्य में काफी महत्त्व रखता है। इन सबका कुल मतलब यह हुआ कि इतिहास का ज्यादा प्रभाव नर एवं मादा के जीवन का अपनी जिन्दगी में बढ़ोतरी की वजह बन सकता है। जब हम सोचते हैं कि हम अपने भूत के बारे में जानते हैं तो हम एतिहासिक भवनों से जुड़ते हैं। ज्यादातर हम जब भूत से जुड़तें हैं तो हमें गर्व होता है। इसे हम अपने आने वाली पीढ़ीयों के लिये सुरक्षित रखते हैं।

ऐतिहासिक भाव का ज्ञान

ऐतिहासाकि विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो हमें भूत के समाजों तथा संस्कृति के विषय के जानकारी देता है। इन सब की जड़ हमें उस सब वस्तुओं में मिल जायेगी जैसे कि कलासच, दफनाना, टूटी हुई इमारतें और ऐतिहासिक भवनों इत्यादि। वो इसका रूपांतर करके यह जानने के लिये कि यह वस्तुएं कौन से समय से हैं इसी अध्ययन से हमें पुराने शिल्प तथा लिखित रिकोर्ड्स भी प्राप्त होते हैं जो कि प्रभावी हो सकते हैं। यह तत्व हमें ज्यादा जानकारी प्राप्त कराते हैं।

ज्यादा समय यह तत्व जमीन में दफन होते है और उनको निकालने के लिये हमें खुदाई करनी पड़ती है। मोहनजोदड़ों, हडप्पा, और नालंदा कुछ ऐसे ही स्थान हैं जिनकी खुदाई करके निकाले गए जिन मे हमें बहूमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति हुई। ऐसी खुदाइयों के बारे में ज्यादा तर जानकारी हमें समाचार पत्रों से प्राप्त होती है। एक बहुत ही आश्चर्यजनक खोज प्रसी फिठालू में हमें गुजरात के निकट समुद्र से मिले। यह माना जाता है कि जो खोज हुई वह जगह हिन्दू भगवान श्री कृष्ण की नगरी द्वारका है। राखीगढ़ी, जो कि हरियाणा में है वह भी हमने अभी ढूंढ़ा है।

एक सफर ऐसे स्थानों पर हमें उस समय पर ले जाती हैं। ऐसी जगह पर जाने का जब भी आपको मौका मिले तो जाना चाहिए। आपको ऐसे स्थानों पर विदेशों में भी जाना चाहिये।

मिली हुई प्राचीन सामग्री मे हमें लिखित हस्तलिपि, स्तम्भ लोहे की तख्तीयाँ, सिक्के, मोहरें, औजार, खिलौने एवं तस्वीरें भी शामिल हैं। वह हस्तनियम, चित्र और इमारत हमें उस समय का एक सुझाव देते है कि उस समय क्या हुआ था? अपने शहर में उस जगह जाये जहाँ पर ऐतिहासिक इमारत हो पर जहाँ पर प्राचीन वस्तुओं का संग्रह हो और जानकारी प्राप्त करें कि वह वस्तुये किस समय की हैं उन को जानने के लिये आप इंटरनेट पर, पुस्तकाल्य से ज्यादा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आज तो आपको यह सब ज्ञान पुस्तकों, समाचार पत्रों एवं मैगजीनों से मिल सकते हैं।

क्या आप जानते हैं

प्राचीन की खोज का कार्य संस्कृति के मंत्रालय के अन्तर्गत आता है। इनके वारे में ज्ञान प्राप्त करना; या नई खोज करना और उन चीजों कि हिफाजत करना इसी मंत्रालय के पास है। इस कार्य को देखने के लिये इसको 24 खण्डों में बांटा गया है। इस कार्य मण्डल के पास बहुत ही शिक्षण कार्यकारणी होते हैं जैसे कि जो प्राचीन की वस्तुओं कि पूरी जानकारी रखते हैं चित्रकार, मौसम को जानकारी रखने वाले तथा वैज्ञानिक हैं। इस जानकारी के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त करने के लिये आप उनके वैबसाइड www.asi.nic.in पर जा कर प्राप्त कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 0.1

1. उन सभी विषयों के बारे में लिखे जो कि सामान्य ज्ञान की जानकारी के लिये जरुरी हों?
2. क्या आप समझते हैं कि इतिहास को पढ़ना जरुरी है? दो उदाहरण सहित बंताये?
3. इतिहास और प्राचीन ज्ञान के बीच में एक अन्तर का एक उदाहरण दें?
4. पाँच स्त्रोतों को बताये जो हमें अपना अतित जानने में मदद करता हो?
5. कम से कम चार ऐसी प्राचीन इमारतों के बारे में जानें जो कि पाठ में दी हुई इमारतों से अलग हों।

0.2.2 भुगोल

इतिहास और प्राचीनक ज्ञान अधुरा रहता है विना वहाँ का भूगोल जाने बिना। भुगोल एक ज्ञान है जो कि जमीन का नक्शा, वहां के लोग जगाहें तथा वहां का वातावरण का ज्ञान देता है। आसान शब्दों में हम कह सकते हैं

भुगोल वह ज्ञान है जो हमें उन संसार के बारे में बताता है जहां हम रहते हैं। भुगोल एक ऐसा विषय है जो सामान्य ज्ञान के वास्तविक विज्ञान से जोड़ता है। समाज एवं जिन्दगी को बनाने

में भुगोल एक जरुरी मुद्दा माना जाता है। यह हमें अलग अलग स्थानों; वहाँ का रहन सहन, राजनैतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र और वातावरण का ज्ञान देता है। यह आपस में जोड़ने के काम आता है। भूगोल हमे दूसरी विषयों का भी ज्ञान देती है। अगर हमें किसी देश के भूगोल के विषय में जानते है तो हम यह भी जान जाते हैं कि वहाँ के इतिहास में क्या हुआ है? इस पाठ में हम यह जान पांयेगे कि प्राचीन युग में मनुष्य ने धनुष, वाण और अन्य औजार कैसे बनाये। भूगोल पढ़ने से हमें यह ज्ञान होता है कि क्यों, बर्फ युग के बाद वातावरण में कोई बदलाव आया है इसी का परिणाम है कि कई घने जंगल समाप्त हो गये हैं। क्या आप सोच सकते हैं कि क्या हुआ होगा? तभी तो घास खाने वाले जानवर जैसे कि हिरण, बकरी, भेड़ या बारहसिंगा की तदाद बढ़ी। आप यह तो जानते होगे कि यह जानवर तेज भागते हैं। इन तेज दौड़ने वाले जानवरों का शिकार भारी हथियारों से होना मुमकीन नहीं था। इसके लिये हलके हथियार चाहियें थे जो कि उस युग के मनुष्य ने बनाये।

क्या आप जानते हैं कि इणो गंगा का मैदान बहुत ही उपजाऊ ज़मीन है भारत मेंघ। यह इसलिये क्योंकि बड़ी नदी गंगा अपने साथ बहुत साफ पानी लाती है जो कि पीने और सिंचाई के काम आता है। यही एक वजह है कि बड़े बड़े साम्राज्य यहाँ पर बने जैसे कि मौर्या, गुप्ता और मुग़ल। लोहे की बड़ी तादात में यहाँ पाने की वजह से इन्होंने बहुत उन्नति की। क्यों यह जानने के लिये पाठ 4 का अध्ययन जरुरी है।

क्रियाकलाप 0.1

मुख्य नगर जैसे कि आगरा, नासिक, पटना और कोलकत्ता ऐसी ही बड़ी नदियों के तट पर वसे हुये हैं। आप को जानकर आश्चर्य होगा कि इन सभी शहरों में इतिहास लिखा गया है। तीन ऐसे कारण बतायें कि ऐसे बड़े शहरों में व्यापार तथा संचालन कैसे वढ़ा।

0.2.3 राजनैतिक विज्ञान

सरकार एक ऐसा शब्द है जिससे आप परिचित हैं। यह शब्द आप ने कई बार पढ़ा होगा या टेलीवीजन पर सुना होगा । क्या आप जानते है कि सरकार क्या होती है? क्या आप जानते हैं कि सरकार नियम बनाती है? और उस देश में रहने वाले सभी व्यक्तियों को वह नियम मानने पड़ते है। प्रजातंत्र में आम इन्सान ही उस व्यक्ति को चुनते है जो मिलकर सरकार बनाते हैं। इस प्रकार सब मिलकर सरकार बनाते हैं जो कि देश के लिये नियम बनाते हैं। उस देश में जहाँ राज पलता हो वहाँ का राजा या रानी यह नियम बनाते हैं। सामान्य विज्ञान का सम्बन्ध हमारे देश को कैसे चलाना चाहिये है। यह हमे यह समझाना है कि सरकार और इस देश को कैसे चलाना है। इसको हम राजनैतिक विज्ञान कहते हैं।

राजनीतिक शास्त्र एक समाजिक विज्ञान है जो कि राजनीती से हमारी जान पहचान करता है। यह हमें बनाता है कि सरकार कैसे चुनी जाती है? राजतैनिक पंडित अध्ययन करते हैं कि राजनैतिक गति विधियों और हालातों में क्या सम्बन्ध है, इसमें सरकार जन समूह राजनैतिक सम्बन्ध और राजनैतिक बर्ताव के बारे में पता चलता है। अगर आप उच्च शिक्षा में राजनीति शास्त्र पढ़ेगे

तो आप को राजनैतिक सिद्धान्त, राजनैतिक सम्बन्ध और राजनैतिक अर्थशास्त्र जो कि इस की मुख्य शाखायें है उसके बारे में ज्ञान मिलेगा।

0.2.4 समाजशास्त्र

समाजशास्त्र भी एक बहुत ही जरुरी सामान्य विज्ञान का भाग है। यह इन्सान का व्यवहार समाज में कैसे होता है इसका अध्ययन करता है। समाजशास्त्र एक लेटिन शब्द 'सोशोलोजी' से बना है। जिसका मतलब अपने साथी के बारे में जानकारी प्राप्त करना होता है। समाजिक शास्त्र समाज को समझने तथा उसके काम करने के तरीके के बारे में जानकारी देता है। यह हमें समाज को बनाने के लिये क्या क्या अन्य चीजें हैं, उसकी भी जानकारी देता है। इसमें जात, लिंग की पहचान, संस्कृति, सभ्यता, धर्म और सरकार भी शामिल हैं। समाजशास्त्र मे समाज को चलाने में एक अकेले मनुष्य तथा समूह कैसा वर्ताव करता है।

0.2.5 अर्थशास्त्र

समाज में रहने का मतलब है कि हमें अपने जीवन को कैसे संगठित करना होता है। हमें कम खर्च में अपनी आय, समय और अन्य संचित कोष का प्रयोग करना आना चाहिये क्यों कि यह सब सीमित होता है। आपको यह भी सीखना चाहिये कि समय का सदुपयोग करके अपना कार्य पूरा कर सके। इसी प्रकार जब हम अपना बजट बना कर उस सभी वस्तुओं का सेवन कर सके। इससे हम अनेक परेशानियों से बच सकते हैं। इसी विद्या को हम अर्थशास्त्र कहते हैं, यह बजट बनाने से भी अधिक है। यह एक वैज्ञानिक विद्या है जो कि इन्सान को बनाना प्रयोग करना व धन को इस्तेमाल करने में मदद करता है। ये बहुत ही जरुरी है कि हमें इसका ज्ञान अपने निश्चित साधनों का प्रयोग कर सके। यह हमारी जरुरतों के साधनों के बीच में तालमेल बनाता है। इसका एक उदाहरण है अपना बजट या समय सारणी बनाना है।

ये सभी विषय हमें अपने जीवन की तरक्की के लिये जरुरी है ।हम भूत में जाकर मनुष्य ने कदम दर कदम कैसे तरक्की की जान सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि विज्ञान के विकास का भी हम अध्ययन करते हैं। कैसे पेड़ पौधे और पशु विकसित हुये? क्या आप को पता है कि जीवविज्ञान में मनुष्य का नाम होमो सेपियन्स है। इसके बारे में अब हम पढ़ेंगें।

पाठगत प्रश्न 0.2

1. इतिहास को समझने में भूगोल कैसे सहयोग देता है?
2. राजनैतिक शास्त्र के मुख्य भाग लिखे?
3. समाजशास्त्र किस बात को दर्शाता है?
4. अर्थशास्त्र क्या है?
5. आप के विचार से राजनैतिक शास्त्र, शास्त्र तथा अर्थशास्त्र हमारे समाज को विकसत करने में कैसे सहायता करता है?

0.3 मनुष्य का विकास

दो करोड़ वर्ष पूर्व पहला मनुष्य देखा गया था, वो भले वन मानुष जैसे दिखते थे। वैज्ञानिक इसको होमो सेंफियरन कहते हैं। इसका मतलब है वह व्यक्ति जिस में दिमाग होता है। उनको खेती वाडी करनी नहीं आती थी। न ही उनको मकान बनाने आते थे। यह लोग गुफों तथा पेड़ों पर रहते थे। क्या आप यह जानते हैं कि वह जमीन पर रहने लगे थे तब उनकों लिखना भी नही आता था। लेखन कला की खोज एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण खोज थीं इसकी वजह से वह लिखने लगे थे। इसी को हम इतिहास कहते हैं।

इस सब की जानकारी के लिये ही इतिहासकार तथा खोज करने वाले वो हथियार, जेवरात तथा गुफाओं में बने चित्रों की समीक्षा करते हैं।

इतिहासकारों ने मनुष्य का विकास के सम्बंध अनेक पुस्तकें लिखी हैं। ऐसी लिखावट हमें पत्थरों, स्तम्भों, और लोहे पर दिख जाते हैं और आजकल कागजों पर भी मिल जाता है।

0.3.1 भ्रमणकारी जीवनः पाषाण युग व्यतीत करता

पूर्व जीवन में मनुष्य एक भ्रमणकारी जीवन व्यतीत करता था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। ताकि उन्हें खाने के लिये कुछ मिल सके। यह लोग एक समूह में ही रहते थे ताकि वह जंगली जानवरों से अपना बचाव कर सकें। और उनका साथ भी रहे। वह पत्थरों से औजार तथा हथियार बनाने लगे। इससे उनके रहन-सहन में विकास होने लगा। इनके मुख्य कारण थे :

पूरा पाषाण युग : (500,000 ई. पू. से 10,000 ई. पू.)

जंगली युग में मनुष्य पहाड़ों के नजदीक रहते थे जहाँ कि नदियाँ वहती थीं। नदियों के द्वारा उन्हें पीने का पानी मिलता था तथा शिकार भी मिलता था जो कि वहाँ पर अपनी प्यास बुझाने आते थे। जंगली जानवरों वहाँ की वजह से उन्हें रहने के लिये गुफा मिल जाती है। इस प्रकार उनको अपने खाने, पीने व रहने का स्थान मिल जाता था। क्या आप जानते हैं? कि उनको बड़े-बड़े जानवरों को भगाना पड़ता था। ताकि अपने रहने के लिये जगह बना सकें।

अपने शरीर को ठण्ड और गर्मी से बचाने के लिये पेड़ की खाल और जानवरों की खाल को धूप में सुखा कर पहनते थे। आप को यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि वातावरण हमारे जीवन में कितना अहम भूमिका निभाता है। कुछ स्थान जैसे कि अंडमान व निकोवार जैसे इलाके हैं जहाँ कि भ्रमण कारी मनुष्य अब भी रहते हैं।

आदि मानव जिन गुफाओं में रहते थे उनकी दीवारों पर उनके शिकार करने के चित्र बने हुये थे। जानवरों का शिकार खासतौर से बड़े जानवर जैसे कि जंगली भैस तथा बारह सिंगा, अब भी भीम बेटका की गुफाओं जो कि मध्य प्रदेश में देखने को मिलते हैं। यह हो सकता है कि इस तरीके के चित्रों को दर्शाने से वे अपनी बच्चों की शिकार करने में मदद करते हैं। या यह भी हो सकता है कि शायद यह अपने रहने वाली गुफाओं की दीवार को अच्छा बनाने में लगे हों।

चित्र 0.1 : भीमबेटका गुफा में चित्रकारी

क्या आप जानते हैं

भीम बेटका एक ऐसी प्राचीनतम जगह है जो कि रायसीना प्रांत मध्य प्रदेश में है। भीम बेटीका की गुफाओं में प्राचीन अंश मनुष्य के पूर्व इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। कुछ लोगों का मानना है कि कुछ झुगीयाँ 10,000 वर्ष पूंव की है। कुछ झुगींयाँ तो कम से कम 30,000 वर्ष पूर्व की हैं।

पूर्व इन्सानों ने कुछ ऐसी परंपराये शुरू की हमें लगता है कि वो उनकी भावनात्मक भावनाओं से समब्धित हों। वो अपने पूर्वजों को पूजते थे और उनकी मौत के बाद वो उनकों दफनाते थे उनके औजारों तथा भोजन पानी के साथ ताकि वे अगले जन्म में आराम से जा सकें। उनकों बिजली और बादलों की गरज से डर लगता था। वो यह नहीं समझ पाते थे सूरज क्यों उगता और डूबता था। पर वो यह जानते थे कि सूरज के उगने से गर्मी तथा डूबने पर शांत और ठन्डे वातावरण का अहसास दिलाता था। यह सब उनके लिये एक अंधविश्वास सा था। क्यों कि वह इसको समझ नहीं पा रहे थे। इसलिये वह सूर्य, चांद, बिजली और बादलों की गर्जन की पूजा करने लगे पर उन्होंने कुदरत के साथ कोई भी खिलवाड़ नहीं किया। उन्होंने कुदरत से केवल उतना ही लिया जितनी की उनको जरुरत थी और चैन से रहने लगे। क्या आप नहीं मानते कि आज अगर हम भी वैसा ही करते जैसे कि हमारे पूर्वजों ने किया वो संसार में खुशहाली रहती, इस तरह से हम पूर्व पाषाण युग से मध्य पाषाण युग में पहुँच गये। यह समय पूर्व पाषाण युग से नव पाषाण काल के बीच का है।

2. मध्य पाषाण युगः (10,000 ई.पू. - 8,000 ई.पू.)

हम लोग देखते हैं। कि मध्य पाषाण युग में आग की खोज कैसे हुई। यह मुमकिन है कि जब हम दो पत्थरों को आपस में ठकरायेंगे तो उसमें से चिन्गारी निकलेगी। यह चिन्गारी किन्हीं सूखे हुये पत्तों पर जब गिरी उससे उन पत्तों में आग लग गयी। इस आग से उस समय उन्हें हैरानी या डर जरुर लगा होगा। लेकिन बुद्धी जिवियों ने इसे अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करना सीख लिया। उन्होंने पाया कि जानवर आग से डरते है तो उन्होंने अपनी गुफाओं के सामने उसको

जलाकर रख लिया ताकि जानवरों का डर न रहे। यह रात को रोशनी भी करती थी। खाने का स्वाद भी अच्छा हो गया जब वह आग पर खाना बनाते थे। उन्होंने यह भी पाया की सर्दी में यह गर्मी भी देती है। आज के युग में भी सर्दी में लोग, आग के चारों तरफ वैठ कर उसका लुफ्त उठाते हैं। क्या, आप समझ सकते हैं। कि पूर्व मनुष्य जो कि पेड़ों की डाल पर रहते थे उन्होंने आग की खोज तक क्या तरक्की की। यह सब एक रात में तो हुआ नहीं था। जाहिर है कि इन सब में वर्षों लगे होंगे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आग एक आश्चर्य तथा पूजनीय वस्तु बन गया।

क्रियाकलाप 0.2

सोचिये कि आप एक ऐसी जगह जा रहे हैं जहां पर बिजली नहीं है। वह एक ठंडी रात है और आपको डर लग रहा है। विचारिये कि हमारे पूर्वजों ने अपने आप को गर्म रखने के लिये क्या किया होगा। अब आप तीन तरीके बतायें जिसमें आप अपने आप को गर्म रख सकें।

आग की ही तरह औजारों का प्रयोग भी एक जरूरी खोज थी। यह औजार जो उस समय के थे उनकों 'साईको लिथसा कहते हैं। यह तेज थे और बहुत काम के भी थे। इनके लिये जानवरों की हड्डीयों का प्रयोग किया गया था। इनसे औजार तथा हथियार जैसे कि छेद करने के लिये। उठाने के लिये, तीर, काँटे, तीर के नुकीले कोण तथा हथोड़ी तथा काटने वाले तथा कुल्हाड़ी जिससे की छोटे पेड कट सकें। इससे वह जानवरों का शिकार खाने के लिये तथा अपने रहने के लिये छोटी छोटी झुगीयाँ बनाने के काम में लाये। छोटे पत्थरों को तराशों के साथ ही उन्होने इन पत्थरों को चाकू की तेज धार वाला बना लिया। इन पत्थरों को, अपने तीर और भाले में जोड़कर ज्यादा फायदेमंद बना लिया। अब वह एक सुरक्षित दूरी से भी जानवरों का शिकार कर सकते थे। ऐसे ही कुछ पत्थर और हथियार हमें पंजाब कश्मीर की घाटियों, हिमालयों के निचले हिस्सों में तथा नर्मदा घाटी में मिले हैं। अगर आप पुस्तकालय में जाकर या इंटरनेट पर इन चीजों के वारे में जानकारी प्राप्त करेगे तो ऐसी कई जगहों की विवरण आपकों मिल जायेंगे।

चित्र 0.2 : पाषाणयुगीन औजार

3. नवपाषाण युग - नवीन पत्थरों का युग (8,000 ई.पू. - 4,000 ई.पू.)

शुरु शुरु में मनुष्य केवल शिकार तथा खाना इकट्टा करते थे। हजारों वर्ष लग गये ज बवह इन सब के बाहर खाना पैदा करने वाले बने। यही वह युग था जब मनुष्य अपने आप खुद उगाने लगे और खाने के लिये दर दर नही घूमना पड़ा। आप क्या सोचते हैं कि यह कैसे हुआ? शायद जैसे आग की खोज हुई उसी प्रकार हो सकता है कि कुछ बीज ज़मीन पर गिर गये होंगे तथा उनमें अंकुर फूट कर कोई पौधा निकल आया होगा। यही पौधे खाने के साधन बन गये। मनुष्य ने इसी तरह बीज वोकर खेती शुरु कर दी। अब उनको जो बीज उन्होंने बोये थे। उसकी देखभाल शुरू कर दी। क्योंकि कम से कम बीज बौने के बाद फसल के लिये छह महीने का इन्तजार करना पड़ता था। यह खेतीवाड़ी की शुरूआत थी। इसके लिये अब लोगों को दर दर न घूम कर एक जगह रूकने की जरूरत पड़ी जिसकी वजह से मनुष्य के जीवन में कई फेर बदल व परिवर्तन आये उन्होंने अपने लिये झुग्गीयाँ बनानी पड़ी जो कि एक तरफ से दिवार से बनी थी। उनके खेत इसी दीवार की सीमा से शुरु होते थे अब उनके पास रहने के लिये एक जगह हो गयी थी जिसने एक गाँव की शक्ल ले ली थी। इस गाँव में कई परिवार जो कि एक दूसरे का संरक्षण करते थे। इसी समय उन्होंने पाया कि वो लोग कुछ जानवर भी अपने पास रख सकते हैं। यह सब खेतीवाड़ी की वजह से सम्भव हुआ। अब यह मनुष्य अन्न अपने लिये तथा उसकी खोल जानवरों के लिये रख लेते थे। क्या आप को मालूम है कि कुत्ता पहला ऐसा जानवर है जो कि पालतू बना। बाद में मनुष्यों वे बकरी, गाय, भैस, और भेड़ भी रखनी शुरू कर दी जिससे कि उन्हें दूध व गोश्त खाने को मिलता था। वो भेड़ो के बाल और उनकी खालों से वस्त्र बनाने लगे। खेतीवाड़ी से उन्हें अन्न तथा जानवरों से दूध, गोश्त व ऊन मिलता था।

इन मनुष्यों ने बीज मे से पौधे जिससे की उन्हें फल प्राप्त होता था ज़मीन से निकलते देखा और देखा कि कैसे एक माँ छोटे से बच्चों को पाल पोस कर वड़ा करती है, उन्होंने पृथ्वी की पूजा करना आरभ्भ कर दिया। इस युग के लोग भी पूर्व युग के लोगों की तरह से अंधविश्वास में ही रहते थे।

जैसे जैसे ज्ञान का विकास हुआ मनुष्य को अपने जीवन में आराम से रहने की आवश्यकता महसूस हुई। उन्हें एहसास हुआ कि अच्छे औजार और सामान की उन को जरूरत है, उन्होंन उसे और तेज बनाना शुरू कर दिया। कुल्हाड़ी पेड़ काटने व गिराने के काम आने लगी। यह कुलहाड़ी मजबूत पत्थर की थी जो कि एक तरफ से पतली व पैनी होती थी। और उसको एक लकड़ी पर कीलों के साथ लगा दिया जाता था। इसी प्रकार एक हंसिया का प्रयोग फसल में काम आता था। इन हथियारों को वह साफ सुथरा तथा चमका कर रखते थे, क्या आप जानते हैं कि इन औजारों का इस्तेमाल आज भी कई छोटी-छोटी जगहों पर होता है।

एक और खोज इस समय पहिये की हैं। कोई भी यह नहीं सोच सकता था कि पहिये कैसे मनुष्य के जीवन को इतना परिवर्तित कर देंगा। पहिया कुँए से पानी निकालने के लिये एक पुलिया का काम करता है। धागा बुनने के काम और कपड़े बनाने के काम के लिये एक चक्र का काम करता है। मिट्टी के वर्तन बनाने के लिये भी यह काम आता है। यह बर्तन खाना पकाने के काम आते थे। यह लकड़ी के बने होते थे जो कि बाहर से मिट्टी का लेप चड़ा होता था। पहिये का सबसे

बड़ा इस्तेमाल गाड़ी के काम आता था जो कि सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाया करता था। आज भी यह पहिये कई जरुरी काम में सहायक होते हैं।

चित्र 0.3 : नवपाषाण युगीन बर्तन

क्रियाकलाप 0.3

जैसे जैसे आप पढ़ते गये होंगे आप ने जाना होगा कि कैसे मनुष्य ने पूर्व पत्थर काल से नये पत्थर युग तक उन्नति की।

पूर्व मनुष्य से वर्तमान मनुष्यों की तुलना इन शब्दों को लेकर करें।

जैसें आग, औजार, कृषि, मिली-जुली खेती, पहिये, धर्म और रहन-सहन वातावरण को लेकर करें।

पाठगत प्रश्न 0.3क

1. पूर्व युग के मनुष्य बन्जारे क्यों कहलाते थे।
2. पूर्व पाषाण युग तथा नवीन पाषाण युग में कम से कम दो अन्तर बतायें।
3. नव पाषाण युग की दो खोज बतायें।
4. तीन ऐसी चीजें बताये जिसका प्रभाव पहिये की खोज से आम मनुष्य के जीवन पर पड़ा होगा?

0.3.2 धातु का प्रयोग

धातु युग मनुष्य खाना इकट्ठा करने से लेकर पाषाण युग से काफी आगे आ चुका था फिर भी वह संतुष्ट नहीं था। शीघ्र ही उन्होंने ताँबे की खोज कर ली। यह युग धातु युग कहलाने लगा।

इस युग में मनुष्य ने ताँबे से सामान बनाना शुरू कर दिया। क्या आप यह पढ़ चुके होंगे कि मिट्‌टी के वर्तन बनाने के लिये आग का इस्तेमाल होता था। यह अब भी भट्‌टी के रूप में काम आता है । ताँबा वो पहला धातू था जो कि पिघला कर दूसरी चीजों को बनाने में काम आया।

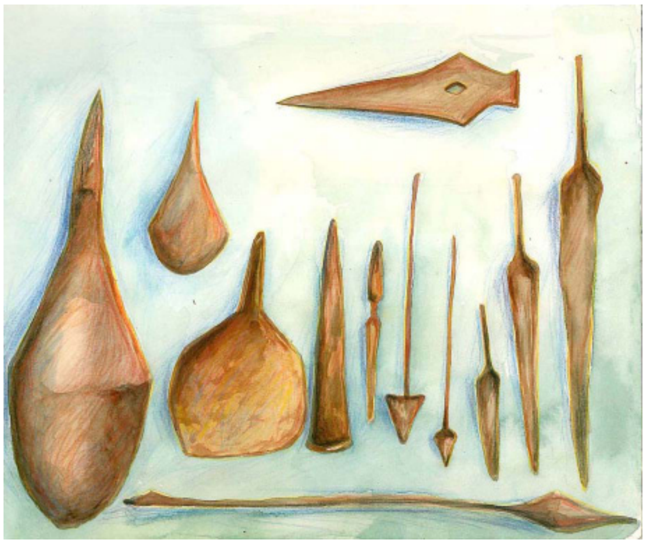

चित्र 0.4 : कास्य युगीन औजार

जैसे जैसे धातू मिलने लगे मनुष्य ने उनके साथ खोजबीन शुरू कर दी। ताँबे को दूसरे धातुओं के साथ मिला कर जैसे कि जस्ता, लोहा और ताम्बे का मिश्रण कर के काँसे को तैयार किया। पहले बने, औजारों की तुलना इन धातुओं के बने औजार ज्यादा फायदेमंद लगे। लौहे के बने कुलहाड़े और चाकू ज्यादा जल्दी पेड़ काटने तथा कृषि के काम आने लगे। जब मनुष्य लोहा और पत्थरों के मिले जुले, औजारों का प्रयोग करने लगे तो यह युग लौह युग कहलाने लगा। इस युग में इस्तेमाल वस्तुओं को हमें ब्रह्मगिरी जो कि माइमोर मे है, नबाब नोली नजदीक नर्मदा नदी और छोटा नागपुर में मिले। अगर आप कभी भी इन जगहों पर जायें तो उनको लिख ले और उसकी तुलना किसी भी दूसरी जगह से जो आपने देखी हों या पढ़ी हों के साथ कीजिये।

जन समूह की शुरूआत

खेतीवाड़ी, मिली जुली खेती, औजारों की प्रगति और पहिये की खोज से मनुष्य एक जगह समूह में रहने लगा इसको हम गांव कहते हैं। यह समूह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। इस बढ़ते हुये समूह को नियंत्रण में रखने के लिये किसी ऐसे व्यक्ति विशेष की जरूरत पड़ी जो वहाँ पर कानुन और आपस में मिल-जुल कर रहने मे सहायता करे। अनेक समूह अपने तरीके से अपना नेता चुनने लगे। यह नेता ज्यादा तर कोई बुर्जग ही होता था या फिर कोई बहुत ताकतवर। यह नेता ही इन सबका ख्याल रखने लगा। अगर कभी दो लोगों में कोई मतभेद होता है। तो यह नेता ही उनको सुलझाता था। धीरे-धीरे यह समूह बढ़ता गया तब नगर व शहर बनने लगे। क्या आप

जानते है कि सबसे पहला कस्बा सरस्वती और सिन्धु में सन् 2500 ई.पू. में बना था। इसलिये इसको सिन्धु घाटी सभ्यता कहा जाता है। यह नाम हड़पा की खोज के बाद हुआ था।

धर्मः- पूरे विश्व में मनुष्यों को अनहोनी का भय लगा रहता है। कोई भी ऐसा हादसा जो उनकी समझ से बाहर था वो उसको बड़े आश्चर्य व हैरानी से देखता था। जमीन ने एक माँ का रूप ने लिया था। जो अपने बच्चों के लिये खाना पीना देती थी। सूर्य हमें जिन्दगी और गर्मी देता था और रात के अन्धेरे में रोशनी देता था। इसी प्रकार चांद, तारे और बारिश के बारे में था। मनुष्य इन सब चीजों को पूजने लगे। यह लोग उस के लिये कुरबानी देने लगे तथा उनके सम्मान में गीत गाने लगे। ऐसे ही कुछ इन्सान जादू टोना करने वाले उभरे जो यह कहते थे कि वो अपने जादू टोने से लोगों की मदद कर सकते हैं। कुछ लोगों ने कुरबानी दी और जनता समूहों की मदद करने के लिये पूजा पाठ करने लगे। यह लोग पंड़ित कहलाने लगे।

लोग यह जान गये थे कि मृत्यु एक ऐसा सफर था जहाँ से कोई जिन्दा वापस नहीं आया। उन्होंने मरे हुये लोगों के लिये कब्र खोदनी शुरू कर दी। ऐसी कब्र को ढ़क कर रखने के लिये बड़े पत्थरों का इस्तेमाल किया जिसको हम मेगालिथ्स कहते हैं। कभी कभी कई ऐसी चीजें जो कि रोज के काम आती हैं कब्र में रखने लगे।

क्या आप को जाना कि यह तरीका आज के युग में भी होता है। आप को बहुत हैरानी होगी कि आज भी हमारी कई चीजें ऐसी हैं जो कि हमारे पूर्वजो से मिलती जुलती हैं।

0.3.3 लोहा युग और आगे

जैसा कि आपने पढ़ा और सीखा कि मनुष्य की सभ्यता और सभ्य रहने के तौर तरीके में काफी विकास हुआ है। पूर्व युग में मनुष्यों ने औजारों को पत्थर से बनाया। बाद में लोहे की खोज से यही औजार ज्यादा फायदेमंद साबित हुये । ताँबे, काँसा और लोहे की खोज क्रम से हुई।

लौहे की खोज मनुष्य की प्रगति की बहुत ही महत्त्वपूर्ण कड़ी थीं इससे बने हुये औजार ज्यादा मजबूत तथा देर तक चलने वाले थे। बाद में और धातुओं का इस्तेमाल होने लगा। लोग दो धातुओं को मिलाकर और एक अन्य धातु बनाने लगे। पीतल इसका एक उदाहरण है उसके बाद हमने स्टील कारबन और लौहे को मिलाकर एक नया धातु का निर्माण किया। प्लास्टिक का निर्माण हुआ। प्लास्टिक का इस्तेमाल अब और औजार और वस्तुओं के बनाने में काम आने लगा। यह दूसरे धातुओं से ज्यादा फायेदेमदं लगा।

प्लास्टिक का इस्तेमाल हमारे वातावरण पर गलत प्रभाव डालने लगा। इसलिये इसका प्रयोग अब कम होने लगा है। आपको प्लास्टिक के बने बैग पर पाबन्दी लगने की बात तो मालूम होगी। वैज्ञानिक ऐसे प्लस्टिक की खोज कर रहे है जिसका हमारे वातावरण पर गलत असर न पड़ें तो अब तो आप जान गये होंगे कि मनुष्य की हर खोज एक चुनौती छोड़ जाती है। यह ही एक चुनौती हमारे आगे बढ़ने मे ंसम्मलित होती है। इस के बारे में हम अब आगे जानने की कोशिश करते हैं।

क्रियाकलाप 0.4

ऐसी धार्मिक कार्यों कि एक लिस्ट बनाये और उनके बारे में अपने परिवार या दोस्तों से चर्चा करें। इस वार्तालाप के मद्दे नजर रखते हुये अपने किसी दोस्त जो कि किसी अन्य शहर मे रहता हो चिट्टी लिखये। उन धार्मिक कार्यों के आज के युग पर क्या प्रभाव पड़ता है। उसे जानिये।

पाठगत प्रश्न 0.3ख

1. हम यह क्यों कहते हैं कि धातु युग के औजार पत्थर युग से बने औजारों से बेहतर होते है?
2. उन तत्वों के बारे में लिखिये जो कि पूर्व मनुष्य थे जिनसे एक जगह पर रुक कर अपना जीवन बीताने लगे। वे तत्त्व का आज के युग में क्या महत्त्व रखते हैं।
3. सामुहिक जीवन व धर्म का समाज पर क्या असर पड़ा था।
4. पूर्व मनुष्य के जीवन में लोहे की खोज का क्या असर पड़ा?

0.4 मनुष्य की प्रगति के विभिन्न प्रश्न

हमने ऊपर पढ़ा कि मनुष्य की सभ्यता विकास के विभिन्न मंचों से होकर गुजरी है विश्व में बहुत ही आम है। हमने यह भी पाया कि कुछ खोज पूर्व से जो कि आज के युग में भी इतनी ही जरुरी है जैसे कि पहिया।

1. **शिकार युग :** ऐसी कई घटनाओं को हमारे पुरानी चीजों को ढूढने वालों को मिली जिससे हम अपने पूर्व जीवन के वारे में जान सके। इस प्रकार कि जिन्दगी को हम पूर्व आदम कहते हैं क्योंकि हमेशा जिन्दगी में मनुष्य वातावरण पर निर्भर रहता था। मनुष्यों ने अपने जीने के लिये जानवरों, पक्षियों, मच्छी का शिकार करा जैसे कि जानवर करते हैं। वह शिकारियों की तरह कई वर्ष तक रहे। यह शाखा पत्थर युग कही गयी थी यही वह समय था जब पशु पालने शुरू हुआ था। यही वह समय का जब लोगों को खाना मिलने की पूरी उम्मीद थी और कुछ नई चीजें जैसे कि दूध, मक्खन और चीज मिलने लगी थी। लोगो के लिये जिन्दगी अब काफी सुरक्षित थी पहले के मुकाबले क्योंकि जानवरों की देखभाल करना शिकार करने से कहीं आसान थीं। मनुष्यों के पास अब सोचने के लिये समय था। लेकिन उनको फिर भी एक जगह से दूसरी जगह अपने मवेशियाँ के साथ चारे के लिये घूमना पड़ता था।
2. **गांव का जीवन (देहात) :** खेतीवाड़ी की वजह से मनुष्य एक जगह रूक कर रहने लगे। इन्होंने सीख लिए था कि किस तरह चीजों को जंमीन मे वो कर फसल उगायी जा सकती है। इस तकनीक से वह एक जगह पर रूक कर फसल उगाने लगे। अब उनके पास रहने के लिये एक पक्की जगह हो गयी थी जिसने आगे चलकर एक गाँव की शक्ल ले ली जहाँ से सभ्यता सही मायने में जन्म लिया। इसको हम देहाती काल भी कह सकते हैं।

3. **शहरी जिन्दगी :** देहाती जीवन में गाँव मे रह कर खेती करने के साथ ही मनुष्य शहरी जिन्दगी की तरफ आगे बड़ा। इस समय जनसंख्या की बढ़ोतरी के साथ मनुष्य केवल भोजन जमा करने वाले नहीं रहे वह अब भोजन बनाने वाले बन गये थे। परिवारों का समूह बढ़ता गया और समाज बनने लगे। अब यह जरुरी नहीं था कि सारा परिवार खेती ही करे। उनमें से कुछ कुम्हार, कुछ कपड़ा बुनने वाले या बढ़ई बन गये। यह लोग अपने काम के बदले अनाज लेते थे और उनके जीवन में काफी बदलाव आ गया था। धातुओं की खोज से उनके जीवन में और प्रगति हुई कुछ कारीगर दूसरों के मुकाबले बेहतर थे। यही एक कारण था कि समाज में भी कुछ कुशल और कुछ अर्धकुशल कारीगर अपने क्षेत्र में हुये। इनही समय में धातुओं जैसे कि ताँबा और पीतल की भी खोज हुई। इन सब का इस्तेमाल जरुरी सामान बनाने में होने लगा था जो कि एक आरामदायक जीवन व्यतीत करने के काम आता था। कारीगर अपनी कुशलता के साथ बर्तन, चमड़े का काम और राजगिरी करने लगे। लोग एक जगह मिलकर अपना सामान बदलने लगे। यहाँ पर किसान भी अपना अन्न वेचने व बदलने के लिये आते थे। यह सब काम एक केन्द्रीय जगह पर होता था। सभ्यता की दौड़ में मनुष्यों अपने भोजन की पूर्णता के साथ बर्तन, कपड़े, प्रादी भी खरीदने बेचते लगे। यह वह समय था जब लोहे की खोज हुई थी। अब एक ऐसा माहौल बनाने की जरुरत पड़ी की कार्य कुशलता के साथ छोटे-छोटे समूह बनायें यही वह समय है जब कार्य क्षमता के साथ विभाजन होने लगा। मनुष्य अब अपने जीवन में आगे बढ़ने और उन्नति की तरफ अग्रसर हो गया। लेखनकला खोज हमारी बढ़त का एक बहुत ही जरुरी कदम था। इससे हमने यह सारी विद्या को लिखकर आने वाली अगली पीढ़ी के लियेकिया ताकि वह इसका फायदा उठा सकें लिखना उन सभी लोगों के लिये जरूरी भी हो गया था जो व्यापार करते थे। और जो लोग गाँव, कस्वा और शहरों के कानून की देख रेख करते थे।

चित्र 0.5 : हडप्पा अभिलेख

4. **शहरी जिन्दगीः-** धीरे-धीरे किसानों ने अधिक मात्रा में अन्न पैदा करना शुरू कर दिया और उनका संचार भी करने लगे ताकि वह आगे काम आ सके। इसका परिणाम यह हुआ की आम आदमी के पास समय बचने लगा जिसकी वजह से सभ्यता का विकास हुआ। तस्वीरें बनाना, मूर्तियों बनाना, संगीत और अन्य ऐसी कलाओं का विकास हुआ। अब जब लोगों के पास सुरक्षा थे और उनके निजी जीवन की चीजें पूरी होने लगी तो उनका ध्यान इन अन्य बातों की तरफ बड़ा। यही एक समय था जब जाति और उनके रहन-सहन से उनका विभाजन होने लगा। कस्बें से निकलकर एक शहरीकरण होने लगा। हड़पा और मोहनजोदडो जो कि अब पाकिस्तान में हैं कुछ ऐसे ही शहर थे। भारत में रोपड़ जो चन्ड़ीगढ़ के पास, लोथल, अहमदाबाद के नजदीक और कालीबंग जो कि राजस्थान में है कुछ ऐसे ही शहर थे। यह शहर बहुत ही सोच समझ के बनाये गये थे और यहाँ सुविधायें भी उपलब्ध थी। इनमे पक्की सड़के जो की एक दूसरे को तिकोण मे, पानी निकालने की सुविधा और पक्की ईटों से तैयार किया गया था। विज्ञान और शिल्प विज्ञान की उन्नति के साथ साथ, सामान बनाने की विद्या मे भी काफी सुधार आया है।

चित्र 0.6 : सिंधुघाटी सभ्यता का पतन लोथल (गुजरात)

जिन्दगी कुछ लोगों के लिये तो काफी आरामदायक हो गयी थी। शीघ्र ही शहरों ने भी अपनी अपनी पहचान बना ली इनमें से कुछ राजधानी शहरों में तबदील हो गये। ऐसे शहरों में हमे ऊँची-ऊँची मीनारें व भवन, जरुरी दफतर, बड़े व्यापारिक भवन तथा कारखानों की भरमार है। जीवन कुछ लोगों के लिये काफी सरल व अच्छी हो गयी है । हम लोगों ने इस समय बहुत सी खोजें, नई वस्तुओं का बनाना आदि साफ पानी पीने के लिये भी उपलब्ध नहीं है। इस की बजह से कई समस्यायें खड़ी हो गयी है जिसका समाधान हम लोगों को ढूढना पड़ेगा। इन सब चीजों के बारे में हम इस पाठ में पढ़ेगे।

पाठगत प्रश्न 0.4

1. मनुष्य की उन्नति के हर चरण से दो लक्षण बतायें?
2. जानवरों के शिकार में पूर्व मनुष्य तथा आधुनिक मनुष्यों के बीच की भिन्नता बतायें?
3. ऐसी क्या परिस्थियाँ थी जिस की वजह से शहरीकरण हुआ?
4. लिखावट ने मनुष्य के जीवन की प्रगति में कैसे मदद की?

0.5 सामान्य विज्ञान और समस्यायें आज के समाज़ मे सम्बन्ध

हमने एक जंगल में रह कर शिकारियों की जिन्दगी से आज के युग में जहाँ हम अन्य ग्रहों की खोज उपग्रह भेजे हैं। यह जानकारी कम्पयूटर में हम संचित कर सकते हैं। हम उस युग में जहाँ जानकारी तथा आपसी वार्तालाप की शिल्पकारी से समलित होती है। इसके वाबजूद हम बदल रहे हैं आगे बढ़ रहे है और प्रगति की और अग्रसर हो रहे हैं।

अब तक तो आप यह समझ ही गये होंगे कि कैसे हम पत्थर युग से नवीन सभ्यता तक का सफर तय किया है। यह एक लम्बासफर है जिसमे हमने नई खोंजे व अन्य परिस्थियों का सामना किया और उनका फायदा लिया। यह सम्बन्ध मनुष्य का केवल अपने आप से ही नहीं, बल्कि समाज और वातावरण मे प्रेरणा डालकर समाज में हम सब मिल कर उन्नति की और आगे बड़े ताकि इसका फायदा केवल कुछ लोग ही नहीं अन्य भी पा सकें।

हांलाकि हमने बहुत प्रगति कर ली है किन्तु अब भी ऐसी कई समस्याये हैं जिनका हमको सामना करना है। आप ऐसी कई समस्यों के बारे में आगे पढ़ेंगे और उन समस्यों का हल भी ढूढ़ना पड़ेगा। वह समस्यायें निम्नलिखित है।

1. गरीबी व भूखमरी
2. धन का सामान्य विभाजन न होना
3. बेरोजगारी या कम आंके जाने वाला काम
4. सामान्य अर्थशास्त्र कर की चोरी और काला धन
5. सामान्य जीवन में घोंटाला
6. वायू प्रदूषण
7. अपने देश के प्रति कम लगाव
8. लिंग से सम्बन्धित समस्यायें, औरतों के खिलाफ जुर्म तथा दहेज, लिंग की पहचान तथा वैश्यावृत्ति
9. बदमाशी और गूंड़ार्गदी, देश में गड़बडी मचाना आदि
10. देश की उन्नति व प्रगति में रूकावटः- जैसे कि भाषा, धर्म, जातपात और आपसी भेदभाव आदि।

पाठगत प्रश्न 0.5

1. ऐसी कुछ समस्याओं के बारे में लिखें जो कि इस पाठ में नहीं बताई गयी हो?
2. ऐसी समस्याओं को जो कि सामान्य ज्ञान से सम्बन्ध रखती है। उनका हल बतायें?
3. मनुष्य की सभ्यता के विकसित होने के साथ समाज में शहरीकरण तथा उपनीकरण की कुंछ समस्याओं के बारे में बतायें।

आपने क्या सीखा

1. सामान्य विज्ञान को पढ़ने की महत्त्वता और कैसे यह हमें दूसरे विषयों में मिलाप कराता है।
2. इतिहास हमे बताता है कि कैसे मनुष्य ने अपने जीवन को खुशहाल बनाने में मदद की।
3. गृह शिल्पियों द्वारा उन सब इमारतों, लोगों का दफन टूटी हुई इमारतें और शिल्पियों के बारे में हमें ज्ञान दिया और भूगोल हमें जमीन के बारे में, लोगों के बारे में और वातावरण के बारें में सिखलाता है।
4. राजनैतिक विज्ञान से हमें राज्य तरीके तथा राज्य के बारे मे बताता है।
5. सामाजिक शास्त्र समाज के बारे में तथा अर्थशास्त्र हमें धन के संग्रह से लेकर मनुष्य कैसे उसका सद् उपयोग करके यह बताता है कि हम उसका प्रयोग कैसे करें।
6. हमने सीखा कि कैसे पत्थर युग में आग की खोज की कैसे उन्होंने हथोड़े, चौपर और कुल्हाड़ी बनाकर छोटे पेड़ तथा जानवरों का शिकार अपने जीवन चलाने के लिये करते थे। वो मरने के बाद अपने पूर्वजों की पूजा करते थे और उनकी कब्र में औजार तथा खानेपीने का सामान रखते थे ताकि वह दूसरे युग मे आराम से जा सकते थे। बाद में उन्होंने अपने औजार और तेज बनाने शुरू कर दिये।
7. आज के युग में जीवन और भी आरामदायक हो गया है। पहिये की खोज और उसकी हमारे जीवन में क्या महत्त्व है। खेतीवाड़ी ने मिलीजुली खेती तथा एक नगर में रूक कर रहने लगे। यह एक समाज की शुरुआत था। शीघ्र ही यह ग्राम, कस्बों और शहरों में विकसत होने लगे।

पाठान्त प्रश्न

1. सामान्य विज्ञान कैसे अन्य शास्त्रोंसे सम्बधिंत है उदाहरणों के साथ समझायें।
2. क्या आप सोचते हैं कि इतिहास का पाठ्यक्रम जरुरी है। अपने विचारों के साथ लिखियें
3. इतिहास तथा शिल्पकारी में क्या सम्बन्ध है?
4. मनुष्य के समाजीकरण के लिये अन्य ज्ञान सामान्य विज्ञान से कैसे सम्बधिंत है?
5. संक्षिप में बतायें कि समाज को बढ़ावा देने में मशीनी युग और पीतल के युग ने क्या योगदान दिया है।
6. आग की खोज का क्या महत्त्व हैं

7. संक्षिप्त मे अर्थशास्त्र के महत्त्व बतायें।
8. अर्थशास्त्री देश के लिये क्यों महत्त्वपूर्ण होता है। क्या आप इसे स्वीकारते हैं यदि हां तो क्यों?
9. पता करें कि प्लास्टिक वैग पर क्यों पाबन्दी लगनी चाहिये। एक ऐसी योजना बनायें जिससे हम चालू और प्लास्टिक के फायदे और नुकसान बतायें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

0.1

1. अर्थशास्त्र, इतिहास और भौगोलिक ज्ञान, भूगोल, राजनैतिक विज्ञान और समाजशास्त्र
2. इतिहास कें अध्ययन से हमें हमारे पूर्वज, हमारी ताकत तथा हमारी उपलब्धियों के बारे में बताता है तथा हमें दिशा का ज्ञान देता है।
3. इतिहास एक ऐसी कहानी है जो कि जो हमें हमारे पूर्वजों के बारे में बताते हैं। और गृहशिल्पी हमें वैज्ञानिक तत्त्वों को समझकर यह बताता है। कि कैसे जो भवन आदि शेष है उससे हमारे जीवन पर क्या असर पड़ता है।
4. शिला लेख सिक्के, स्मारक, मुहर और खोजे हुये स्थान।
5. हडप्पा, मोहनजोदड़ो, राखीगढ़ी, द्वारका और नालंदा।

0.2

1. भूगौलिक चित्र किसी भी सामाजिक की ऐतिहासिक बढ़ाव के बारे में बहुत ही जरुरी है जैसे कि सिन्धु नदी की घाटी इण्डस सम्राज्य के लिये।
2. राजैनितिक शास्त्र सामान्य विज्ञान की वह शाखा है जो किसी भी क्षेत्र की राज्यनैतिक जानकारी और उसके असर के बारे में बताता है।
3. समाजशास्त्र वह विद्या है जो कि मनुष्य की सभ्यता बताता है।
4. अर्थशास्त्र एक ऐसी वैज्ञानिक विद्या है जिससे हमें अपने धन का प्रयोग, किसी चीज की उत्पादन, खपत करना सिखाती है।
5. यह सब चीजें आपस में समबन्ध रखती है। और सामान्य शास्त्र से मतलब रखती है।

0.3क

1. क्योंकि वो एक जगह से दूसरी जगह खाने की तालाश में घूमते रहते थे।

2. नये युग के बढ़े औजार ज्यादा तेज तथा पौलिश होने की वजह से ज्यादा चलते थे यह खासियत पुराने युग के औजारों में नहीं थी।

3. पहिये की खोज और मिलीजुली खेती

4. सामान इधर से उधर ले जाने में और बर्तन बनाने के लिये।

0.3b

1. धातु के बने औजार ज्यादा फायदेमंद पुराने औजारों कें मुकाबले थे। धातु के बने छूरी तथा कुल्हाड़ी के प्रयोग से पेड़ काटने में तथा खेती के लिये और जमीन साफ कर सकते थे।

2. आग, पहिये तथा धातु की खोज। खेतीवाड़ी ने एक सामान्य जीवन बना दिया था। यह सब वस्तुओं मनुष्य की आगे की जिन्दगी जीने के लिये खाफी थी।

3. इसके द्वारा सयुक्त परिवार में रहने की प्रथा चल पड़ी जिसके कारण सामान्य विश्वास, आपसी कार्य वही जैसे कि व्यापार, राजनैतिक एवं सुरक्षा आदि। सामान ज्यादा मजबूत तथा काफी चलनेवाले हो गये थे। इसकी बजह से कार्य कि क्षमता बढ़ गयी थी।

0.4

1. 1.3 और 1.4 में इसके संदर्भ में देगें।

2. यह शिकार जीवित रहने के लिये और केवल मनोरजंन के लिये शिकार करना।

3. एक ऐसी जगह जो व्यापार, वाणिज्य तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखे।

4. ज्यादा दूर तक संचार करना तथा हिसाब किताब तथा रिकार्ड करना।

0.5

1. छोटी लड़कियों की शिक्षा तथा गरीब वर्ग के खिलाफ अत्याचार इत्यादि।

2. यह उन चीजों में मदद करता है जो कि हमें अपनी परेशानियाँ सुलझाने के लिये चाहियें उन चीजों का समीकरण करना जो हमारी निजी जिन्दगी में आती है। वह उसे उन चीजों को टूटने मे मदद करती है और हमे उसका सद्उपयोग करने में मदद करता है।

3. समीक्षा करके लिखे कि तरक्की के कैसे आगे बढ़े?